إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ لَن تُغۡنِيَ عَنۡهُمۡ أَمۡوَٰلُهُمۡ وَلَآ أَوۡلَٰدُهُم مِّنَ
ٱللَّهِ شَيۡـٔٗاۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمۡ وَقُودُ ٱلنَّارِ ١٠ كَدَأۡبِ ءَالِ فِرۡعَوۡنَ
وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡۚ كَذَّبُواْ بِـَٔايَٰتِنَا فَأَخَذَهُمُ ٱللَّهُ بِذُنُوبِهِمۡۗ
وَٱللَّهُ شَدِيدُ ٱلۡعِقَابِ ١١ قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُواْ سَتُغۡلَبُونَ
وَتُحۡشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ ١٢ قَدۡ كَانَ لَكُمۡ ءَايَةٞ
فِي فِئَتَيۡنِ ٱلۡتَقَتَاۖ فِئَةٞ تُقَٰتِلُ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ وَأُخۡرَىٰ كَافِرَةٞ
يَرَوۡنَهُم مِّثۡلَيۡهِمۡ رَأۡيَ ٱلۡعَيۡنِۚ وَٱللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصۡرِهِۦ مَن يَشَآءُۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبۡرَةٗ لِّأُوْلِي ٱلۡأَبۡصَٰرِ ١٣ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ
ٱلشَّهَوَٰتِ مِنَ ٱلنِّسَآءِ وَٱلۡبَنِينَ وَٱلۡقَنَٰطِيرِ ٱلۡمُقَنطَرَةِ مِنَ
ٱلذَّهَبِ وَٱلۡفِضَّةِ وَٱلۡخَيۡلِ ٱلۡمُسَوَّمَةِ وَٱلۡأَنۡعَٰمِ وَٱلۡحَرۡثِۗ ذَٰلِكَ
مَتَٰعُ ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَاۖ وَٱللَّهُ عِندَهُۥ حُسۡنُ ٱلۡمَـَٔابِ ١٤ * قُلۡ
أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيۡرٖ مِّن ذَٰلِكُمۡۖ لِلَّذِينَ ٱتَّقَوۡاْ عِندَ رَبِّهِمۡ جَنَّٰتٞ
تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا وَأَزۡوَٰجٞ مُّطَهَّرَةٞ
وَرِضۡوَٰنٞ مِّنَ ٱللَّهِۗ وَٱللَّهُ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ ١٥ ٱلَّذِينَ يَقُولُونَ
رَبَّنَآ إِنَّنَآ ءَامَنَّا فَٱغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ ١٦
ٱلصَّٰبِرِينَ وَٱلصَّٰدِقِينَ وَٱلۡقَٰنِتِينَ وَٱلۡمُنفِقِينَ وَٱلۡمُسۡتَغۡفِرِينَ
بِٱلۡأَسۡحَارِ ١٧ شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ
وَأُوْلُواْ ٱلۡعِلۡمِ قَآئِمَۢا بِٱلۡقِسۡطِۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ
ٱلۡحَكِيمُ ١٨ إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلۡإِسۡلَٰمُۗ وَمَا ٱخۡتَلَفَ ٱلَّذِينَ

أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ إِلَّا مِنۢ بَعۡدِ مَا جَآءَهُمُ ٱلۡعِلۡمُ بَغۡيَۢا بَيۡنَهُمۡۗ وَمَن يَكۡفُرۡ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَإِنَّ ٱللَّهَ سَرِيعُ ٱلۡحِسَابِ ١٩ فَإِنۡ حَآجُّوكَ فَقُلۡ أَسۡلَمۡتُ وَجۡهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ ٱتَّبَعَنِۗ وَقُل لِّلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡأُمِّيِّـۧنَ ءَأَسۡلَمۡتُمۡۚ فَإِنۡ أَسۡلَمُواْ فَقَدِ ٱهۡتَدَواْۖ وَّإِن تَوَلَّوۡاْ فَإِنَّمَا عَلَيۡكَ ٱلۡبَلَٰغُۗ وَٱللَّهُ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ ٢٠

Theme	
Wealth or children will not be a defense against disbelief. Battle of Badr was a sign of Allah's favors. Comforts of this life vs. the life in the hereafter. Testimony of Allah about Himself. True religion in the sight of Allah is only Al-Islam.	माल व औलाद कुफ़्र के मुक़ाबले में कोई बचाव नहीं दे सकते। ग़ज़वा-ए-बद्र अल्लाह तआला की इनायात की एक निशानी था। दुनियावी ज़िंदगी की आसाइशें बमुक़ाबला आख़िरत की ज़िंदगी। अल्लाह तआला की अपनी ज़ात के बारे में गवाही। अल्लाह तआला के नज़दीक सच्चा दीन सिर्फ़ इस्लाम है।
Tarjumani	
Surely, neither their wealth nor their children will save the unbelievers from the wrath of Allah: they are the ones who will become the fuel for hellfire. Their end will be the same as that of the people of Firaun (Pharaoh) and their predecessors who denied Our	जिन लोगों ने कुफ़्र का रवैया इख्तियार किया है, उन्हें अल्लाह के मुक़ाबले में न उनका माल कुछ काम देगा, न औलाद	वे दोज़ख का ईंधन बनकर रहेंगे	उनका अंजाम वैसा ही होगा, जैसा फिरऔन के साथियों और उनसे पहले के नाफरमानों का हो चुका है कि उन्होंने आयते-इलाही को

revelations, so Allah called them to account for their sins. Allah is strict in retribution. O Muhammad, say to the unbelievers: "Soon you will be over-powered and driven together to Hell - which is a horrible refuge, Indeed there was a sign (lesson) for you in the two armies which met on the battlefield (of Badr); one was fighting for the cause of Allah and the other had rejected Allah; the believers saw with their own eyes that the unbelievers were twice their number. But the result of the battle proved that Allah strengthens with His own aid whom He pleases. Surely, there is a lesson in this for those who have sight. The life of men is tempted by love and desire for women, children, the hoarding of treasures of gold and silver, branded horses, wealth of cattle and plantations. These are the comforts for the transitory life of this world; the excellent abode, however, is with Allah. Say: "Shall I tell you of better	झुठलाया, नतीजा यह हुआ कि अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और हक़ यह है कि अल्लाह सख्त सज़ा देनेवाला है	पास ऐ नबी, जिन लोगों ने तुम्हारी दावत को कबूल करने से इनकार कर दिया है, उनसे कह दो कि क़रीब है वह वक्क्त जब तुम मगलुब हो जाओगे और जहन्नम की तरफ़ हाँके जाओगे, और जहन्नम बड़ा ही बुरा ठिकाना है	तुम्हारे लिए उन दो गरोहों में एक निशाने-इबरत था जो (बद्र में) एक दूसरे से नबर्दआज़मा हुए	एक गरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा गरोह काफ़िर था	देखनेवाले बचश्म-सर देख रहे थे कि काफ़िर गरोह मोनिन गिरोह से दो चन्द है	मगर (नतीजे ने साबित कर दिया कि) अल्लाह अपनी फ़तह व नुसरत से जिसको चाहता है, मदद देता है	दीदए-बीना रखनेवालें के लिए इसमें बड़ा सबक़ पोशीदा है	लोगों के लिए मारगूबाते-नफूस--- औरतें, औलाद, सोने-चाँदी के ढेर, चीदा घोड़े, मवेशी और जारई ज़मीने --- बड़ी ख़ुशआइन्द बना दी गई हैं, मगर ये सब दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी के सामान हैं|हक़ीकत में जो बेहतर ठिकाना है वह तो अल्लाह के

things than these, with which the righteous will be rewarded by their Rabb? There will be gardens beneath which rivers flow, where they will live forever with spouses of perfect chastity and the good pleasure of Allah. Allah is watching His servants very closely. The righteous people are those who pray: "Our Rabb! We sincerely believe in You: please forgive our sins and save us from the agony of the hellfire;") who are steadfast, sincere, obedient, and charitable, and who seek forgiveness from Allah in the last hours of the night. Allah Himself has testified to the fact that there is no god but He and so do the angels and those of knowledge standing firm on justice. There is no god but He, the Mighty, the Wise. Surely, the only Deen (true religion and the Right Way of life) in the sight of Allah is Islam. Those to whom the Book was given did not differ except out of envy among themselves, and after true knowledge had come	पास है	कहो : मैं तुम्हें बताऊँ कि इनसे ज़्यादा अच्छी चीज़ क्या है? जो लोग तकवा की रविश इखतियार करें, उनके लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वहाँ उन्हें हमेशगी की ज़िन्दगी हासिल होगी, पाकीज़ा बीवियाँ उनकी रफ़ीक होंगी और अल्लाह की रिज़ा से वे सरफ़राज़ होंगे	अल्लाह अपने बन्दों के रवैये पर गहरी नज़र रखता है	ये वे लोग हैं जो कहते हैं कि "मालिक, हम ईमान लाए, हमारी खताओं से दरगुज़र फरमा और हमें आतिशे-दोज़ख से बचा ले |" ये लोग सब्र करनेवाले हैं, रास्तबाज़ हैं, फारमाँबरदार और फ़य्याज़ हैं और रात की आख़िरी घड़ियों में अल्लाह से मगफिरत की दुआएँ माँगा करते हैं	अल्लाह ने ख़ुद इस बात की शहादत दी है कि उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है और फ़रिश्ते और सब अहले-इल्म भी रास्ते और इनसाफ़ के साथ इसपर गवाह हैं कि उस ज़बरदस्त हकीम के सिवा फिल-वाक़े कोई ख़ुदा नहीं है	अल्लाह के नज़दीक दीन सिर्फ़ इस्लाम है	इस दीन से हटकर जो मुख्तलिफ़तरीक़े उन लोगों ने इखतियार किए जिन्हें किताब दी गई थी, उनके इस तर्ज़े-

to them. They should know that Allah is swift in calling to account those who deny His revelations. So if they argue with you (O Muhammad), tell them: "I have submitted myself entirely to Allah and so have those who follow me." Then ask those who are given the Book and those who are illiterate (Arab pagans): "Will you also submit yourselves to Allah?" If they become Muslims they shall be rightly guided but if they turn back, you need not worry, because your sole responsibility is to convey the Message. Allah is watching all His servants very closely.	अमल की कोई वजह इसके सिवा न थी कि उन्होंने इल्म आ जाने के बाद आपस में एक-दूसरे पर ज़्यादती करने के लिए ऐसा किया और जो कोई अल्लाह के अहकाम व हिदायत की इताअत से इनकार कर दे, अल्लाह को उससे हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती	अब अगर ऐ नबी, ये लोग तुमसे झगड़ा करें तो उनसे कहो, "मैंने और मेरे पैरौओं ने तो अल्लाह के आगे सरे-तसलीम ख़म कर दिया हैं |" फिर अहले-किताब और गैर-अहले-किताब दोनों से पूछो, "क्या तुम ने भी उसकी इताअत व बन्दगी कबूल की?" अगर की तो वे रहे-रास्त पा गए, और अगर उससे मुँह मोड़ा तो तुमपर सिर्फ़ पैगाम पहुँचा देने कि ज़िम्मेदारी थी	आगे अल्लाह ख़ुद अपने बन्दों के मामलात देखनेवाला है	
Tafsir	